रोहिणी व्रत व्रत कथा (Rohini Vrat Vrat Katha)

रोहिणी व्रत की एक लोकप्रिय कथा है। एक समय की बात है, धनमित्र नाम का एक राजा था जिसका वसुपाल नाम का एक मित्र था। धनमित्र की एक बेटी थी जिसका नाम दुर्गंधा था, जो बदबू के साथ पैदा हुई थी। धनमित्र को उसके विवाह की चिंता थी और उसने अपनी बेटी की शादी वसुपाल के बेटे श्रीसेन से करने का फैसला किया। हालाँकि, शादी के एक महीने बाद, दुर्गंधा बदबू के कारण अपने पति के घर छोड़ कर चली गई। एक दिन जंगल में भटकते हुए दुर्गंधा की मुलाकात अमृतसेन मुनि से हुई, जिन्होंने उसे अपनी समस्या से छुटकारा पाने के लिए रोहिणी व्रत करने का सुझाव दिया। अमृतसेन मुनि ने उसे भूपाल नाम के एक राजा और उनकी रानी सिंधुमति के बारे में बताया, जो एक पास के शहर में रहते थे। उन्होंने दुर्गंधा को उनके महल में जाने और रानी से रोहिणी व्रत करने का अनुरोध करने की सलाह दी। दुर्गंधा ने अमृतसेन मुनि की सलाह मानी और राजा भूपाल के महल गई। उसने रानी सिंधुमति से मुलाकात की और उनसे रोहिणी व्रत करने का अनुरोध किया। रानी सिंधुमति ने दुर्गंधा की मदद करने के लिए सहमति व्यक्त की और बड़ी भक्ति के साथ व्रत किया। परिणामस्वरूप, दुर्गंधा की बदबू गायब हो गई और वह एक सामान्य जीवन जी सकी।

रोहिणी व्रत (Rohini Vrat) को जैन धर्म (Jainism) में बहुत शुभ माना जाता है। यह माना जाता है कि इस व्रत का पालन करने से आध्यात्मिक विकास प्राप्त करने, आत्मा को शुद्ध करने और सुख-समृद्धि लाने में मदद मिल सकती है। यह भी माना जाता है कि इस व्रत को करने से स्वास्थ्य, धन और रिश्तों से संबंधित विभिन्न समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

www.janbhakti.in